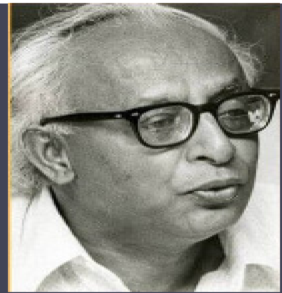

Structural-functional approach of M.N.SRINIVAS

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

भारतीय समाजशास्त्रयों में प्रो0 ऍम0एन0श्रीनिवास का नाम अग्रणीय है। कर्नाटक के मूल निवासी श्रीनिवास का पूरा नाम मैसूर नरसिंहराव श्रीनिवास है। 16 नवम्बर 1916 को मैसूर में जन्में श्रीनिवास की प्रारम्भिक शिक्षा मैसूर के स्थारनीय शिक्षण संस्थाओं में हुई। स्नातकोत्तर की डिग्री प्रो0 जी0 एस0 घुरये के मार्गदर्शन में सम्पनन कर पी0ए0डी0 की डिग्री मुम्बई विश्वविद्यालय से प्राप्त की तत्पश्चात् आगे की पढ़ाई के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लन्दन में गये और 1951 में पुन' भारत लौटकर बड़ौदा एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में (Delhi school of Economics) समाजशास्त्र व सामाजिक मानवशास्त्र विभागों में अपनी सेवाएँ देकर सफलतापूर्ण संचालन किय।

मुख्य रचनाएँ–

- रिलिजन एवं सोसाइटी अमंग द कुगर्स ऑफ साउथ इण्डिया, 1952
  (The religion and society among the coogars south india-1952)
- कास्ट इन मार्डन इण्डिया एण्ड अदर ऐसेज–1962
  (Caste and modern india and other essays-1962)
- सोशल चेंज इन मार्डन इण्डिया–1973
  (Social change in Modern India- 1973)
- द रिमेनबर्ड विलेज–1976
  (The remainbard villiage-1976)
- मैरिज एण्ड फेमिली इन मैसूर–1942
  (Marriage and Family in Mesoor-1942)
- द डोमिनेंट कास्ट एण्ड अदर एसेज–1998
  (The Dominant Caste and other Essays-1998)

संस्कृतिकरण (Sanskritization)

- एम0एन0श्रीनिवास की संस्कृतिकरण की अवधारणा का विशेश महत्व है। उन्होंने अपनी पुस्तक **Social Change in Modern India** में लिखा है–''संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जातियाँ या जनजातियाँ अथवा अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन पद्धति को बदलता है।'' प्रारम्भ में श्रीनिवास ने इस स्थिति को 'ब्राह्मणीकरण' नाम से संबोधित किया।

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया

- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के माध्यम से काई भी जाति या समूह अपने से उच्च जाति (विशेशतः द्विज जाति) के रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और मूल्यों को अपनाने का प्रयास करता है।
- ऐसा करने से निम्नजाति, जनजाति या समूह के रीति–रिवाज व जीवन भौली में उल्लेखनीय परिवर्तन होते हैं।
- संस्कृतिकरण द्वारा निम्न स्तर की जाति समूह सामाजिक सोपान में वर्तमान से उच्च स्थिति Higher status प्राप्त करने का प्रयास करता है। जिसके फलस्वरूप जातीय या सामाजिक संस्तरण social Stalification और संरचना (Structure) में भी उसी अनुरूप परिवर्तन होता जाता है।

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया

- सामान्य रूप से संस्कृतिकरण एक जाति को जातीय संस्तरण में ऊँचा पद प्राप्त करने योग्य बनाती है। यह जातीय आधारों में खुलापन लाकर जातीय गतिशीलता को सम्भव बनाती हैं
- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया द्वारा लाया गया परिवर्तन जीवन के ढंग (way oflife) से लेकर सामाजिक स्थिति तक हो सकता है।
- श्रीनिवास के अनुसार ब्राह्मण आदर्श के अतिरिक्त क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र आदर्श भी संस्कृतिकरण के आदर्श हो सकते हैं।

संस्कृतिकरण की विशेशताएँ
(Characterstics of Sanskritization)

- संस्कृतिकरण की **प्रक्रिया सार्वभौमिक** है।
- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया द्वारा सामाजिक पद में परिवर्तन के लिए एक निम्न जाति **दो या दो से अधिक पीढ़ी पहले अपना संबंध किसी उच्च जाति से जोड़ती है।**
- योगेन्द्र सिंह के अनुसार यह एक अग्रिम समाजीकरण (Anticipatory Socialization) हैं, जिसमें निम्न जाति किसी उच्च जाति की संस्कृति को इस उम्मीद से अपनाती है कि उसे उस जाति में सम्मिलित कर लिया जायेगा।
- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया **सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की सूचक** है।

संस्कृतिकरण की विशेशताएँ (Characterstics of Sanskritization)

- संस्कृतिकरण अनेक अवधारणाओं का गुच्छा है। इसमें ब्राह्मणीकरण, परसंस्कृतिकरण, अग्रिम सामाजीकरण, अनुकरण आदि सभी धारणाओं के तत्व मौजूद हैं।
- संस्कृतिकरण को एक प्रकार का विरोधी आंदोलन (Protest Movement) कहा जा सकता है, जिसमें एक ऐसी प्रतिस्पर्द्धा की प्रक्रिया चलती है। जिसके अंतर्गत अपने से ऊँची सामाजिक स्थिति को प्राप्त कर लेने की कोशिश की जाती है।
- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया संदर्भ समूह (Reference Group) से मिलती जुलती है।

संस्कृतिकरण व ब्राह्मणीकरण में अंतर
(Differences between sanskritazation and Brahminization)

एम0 एन0 श्रीनिवास ने 'ब्राह्मणीकरण' शब्द का उपयोग किया था, लेकिन योगेन्द्र सिंह ने संस्कृतिकरण को ब्राह्मणीकरण की तुलना में अधिक व्यापक अवधारणा बतलाया। अतः दोनों के अन्तर को निम्नवत् स्पश्ट किया जा सकता है–

- ब्राह्मणीकरण में केवल ब्राह्मणों की जीवन पद्धति का ही अनुकरण किया जाता है, जबकि संस्कृतिकरण में क्षत्रिय वश्ैय तथा अन्य प्रभु जातियाँ भी हैं।
- संस्कृतिकरण ब्राह्मणीकरण की अपेक्षा अधिक विस्तृत एवं व्यापक अवधारणा है।
- ब्राह्मणीकरण शब्द का प्रयोग संस्कृतिकरण के पूर्व में किया गया था।
- ब्राह्मणीकरण की अपेक्षा संस्कृतिकरण जातीय परिवर्तनों को इंगित करता है।

संस्कृतिकरण के कारक
(factors of Sanskritzation)

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को बढ़ाने वाले कारकों कों निम्नवत् समझा जा सकता है–

- यातायात व जनसंचार साधनों में क्रांन्तिकारी परिवर्तन।
- समाज की पिछड़ी जातियों के उत्थान के निमित्त आर्थिक सुधार कार्यक्रमों के फलस्वरूप पिछड़ी
- जातियों द्वारा स्वयं की जीवन भौली को प्रभुत्व सम्पन्न जातियों के अनुरूप बनाना।
- शिक्षा एवं पाश्चात्य शिक्षा।
- सामाजिक सुधार आन्दोलन नवीन संविधान एवं कानून एवं प्रजातांत्रिक मूल्य व्यवस्था।
- नगरीकरण, धार्मिक तीर्थस्थल।
- राजनीतिक व्यवस्था।